Subject :- Sociology Date :- 14/05/2020
Class :- D-I (H) Paper :- 2nd
Topic :- मर्टन का प्रकार्यात्मक सिद्धान्त
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga

online study Material No :- (7)

R.K. Merton का प्रकार्यात्मक सिद्धान्त

मर्टन (R.K. Merton) ने अपने पूर्ववर्ती विचारकों (Preceding Thinkers) के विचारों को अस्वीकृत कर दिया। उनका कहना है कि Spencer आदि प्रारंभिक विचारकों के विचारों से पता चलता है कि सामाजिक संरचना के विभिन्न अंग या इकाइयाँ एक विशेष प्रकार के प्रकार्य (Function) कहलाते हैं और यह प्रकार्य सामाजिक संरचना के अस्तित्व के लिए आवश्यक होता है। यदि कोई अंग या इकाई अपना पूर्व निर्धारित प्रकार्य करना बन्द कर दे तो उससे सामाजिक संरचना के अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न हो सकता है। अतः मर्टन ने प्रकार्यवादियों के सिद्धान्त की तीन आधारभूत मान्यताओं का उल्लेख किया है, जिनको कि उन्होंने स्वीकार नहीं किया है:-

1. समस्त सामाजिक तत्व या इकाईयाँ सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत कुछ विशेष प्रकार के प्रकार्य ही सम्पादित करती हैं।
2. ये सामाजिक तत्व या इकाईयाँ सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था के लिए कार्य करती हैं।
3. सामाजिक व्यवस्था का निर्माण इन सामाजिक इकाईयों के प्रकार्यों के आधार पर ही होता है।

उपरोक्त मान्यताओं को अस्वीकार करते हुये मर्टन ने बतलाया कि यह सोचना गलत है कि सामाजिक इकाईयाँ या तत्व केवल प्रकार्य (Function) ही हैं और ये प्रकार्य ही सामाजिक संरचना के निर्माण में योगदान करते हैं।

Merton का कहना है कि यह आवश्यक नहीं है कि इकाईयाँ या तत्व सदैव प्रकार्य ही करें, हो सकता है कि वे दुष्कार्य (Dys-function) भी करें और इस प्रकार सामाजिक संगठन को व्यवस्थित करने के स्थान पर अव्यवस्थित या विघटित कर दें। अतः यह कहना उचित नहीं जान पड़ता है कि सामाजिक या सांस्कृतिक इकाईयाँ या तत्व सम्पूर्ण सामाजिक या सांस्कृतिक व्यवस्था के लिए प्रकार्य करती हों और उनके प्रकार्य सामाजिक संरचना के अस्तित्व के लिए आवश्यक हों।

मर्टन ने विस्तृत रूप से प्रकार्यात्मक विश्लेषण पर अपने विचार प्रकट किये हैं तथा विश्लेषण के वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित

उदाहरण भी दिये हैं। उन्होंने किसी घटना या क्रिया से उत्पन्न प्रकार्यों का कुछ श्रेणियों में वर्गीकरण किया है जिसे प्रकार्य और दुष्कार्य (Function & Dysfunction) कहा है। घटना, संरचना या सामाजिक इकाईयों के प्रकार्य उन परिणामों को कहा है जो उस अवस्था में अनुकूलन अथवा सामंजस्य स्थापित करते हैं। दुष्कार्य (Dysfunction) उन परिणामों को कहा है जो उस व्यवस्था में अनुकूलन तथा सामंजस्य को कम करते हैं। इसी आधार पर प्रकार्यात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। साथ ही सामाजिक संरचना के प्रकार्य और दुष्कार्य का पता लगाया जा सकता है। इन प्रकार्यों तथा दुष्कार्यों के द्वारा सामाजिक संरचना का निर्माण होता है।

Mertonकी प्रकार्यवाद की मान्यताओं को हम संक्षेप में अग्रांकित रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं :—

1. प्रकार्यात्मक एकता एक प्रयोग सिद्ध संगठन है।
2. एक ही समाज में एक प्रथा या रीति-रीवाज के कुछ समूहके लिए प्रकार्यात्मक हो सकती है और एकता उत्पन्न कर सकती है पर अन्य कुछ समूहों के लिए वही प्रथा या रीति-रीवाज दुष्कार्यात्मक हो सकती है।
3. सार्वभौमिक प्रकार्यवाद के प्रत्यय में कुछ परिवर्तन एवं संशोधन होने चाहिए क्योंकि यह कोई आवश्यक नहीं है कि समाज या समूहके जो प्रकार्यात्मक परिणाम हैं वे अन्य समाजों या समूहों पर भी लागू हों।
4. एक ही तत्व या इकाई के अनेक प्रकार्य हो सकते हैं। साथ ही एक प्रकार्य के अनेक विकल्प (Alternative) भी हो सकते हैं।
5. एक इकाई विशेष की प्रकृति को एक विशिष्ट सन्दर्भ में ही समझने का प्रयास किया जाना चाहिए।
6. कुछ इकाईयों या तत्वों के विभिन्न प्रकार्य हो सकते हैं जिनके कुछ परिणाम दुष्कार्यात्मक भी हो सकते हैं। अतः प्रकार्यात्मक विश्लेषण के अन्तर्गत प्रकार्यों द्वारा सभी सामाजिक इकाईयों का विशिष्टीकरण या विशेष रूप से स्पष्टीकरण होना चाहिए।
7. कार्यात्मक विश्लेषण को हम आदर्शात्मक नहीं मान सकते हैं।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि समाजशास्त्रीय व्याख्याओं के लिए प्रकार्यात्मक विश्लेषण एकदम आदर्शात्मक न हो परन्तु यह सर्वाधिक आशाजनक तथा संभवतः सबसे कम विधिवद्ध पद्धति है। मर्टन का कहना है कि प्रकार्यवाद एक तथा विभिन्न बौद्धिक क्षेत्रों में विकसित हो गया है जिसके कारण इसका खण्ड

Scanned with CamScanner

विस्तार तो हो गया परन्तु इसका गहन विस्तार नही हो पाया है। अभी तक जिस रुप में यह विकसित हो चुका है, उससे ऐसा लगता है कि भविष्य में यह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगा।

आलोचनाएँ

1. प्रकार्यवाद केवल संरचना और उसके प्रकार्यों का ही अध्ययन करता है। इस प्रकार इसका क्षेत्र सीमित हो जाता है।
2. प्रकार्यवाद केवल परिणामों अर्थात प्रकार्यों का अध्ययन करते हैं, उनके कारणों का नही।
3. प्रकार्यवाद इन मान्यता पर आधारित है कि समाज में संतुलन की स्थिति विद्यमान है परन्तु यह मान्यता उचित नही है।
4. मर्टन ने प्रकार्यों का जो विभाजन किया है, वह अस्पष्ट है।
5. प्रकार्यवाद में पद्धति शास्त्रीय दोष भी विद्यमान है।
6. प्रकार्यवाद सामाजिक संरचना और सामाजिक व्यवस्था में कोई भेद नही करता है।
7. प्रकार्यवाद भूत और वर्तमान के मध्य सम्बन्धों को विवेचना नही करता है। प्रकार्यवाद केवल घटना में वर्तमान स्वरुप का ही अध्ययन करता है।
8. प्रकार्यवाद की एक आलोचना यह भी की जाती है कि यह रुढ़िवादी विचारधारा है। प्रकार्यवादियों के अनुसार प्रत्येक तथ्य प्रकार्यात्मक है, इसलिए वह अपरिहार्य (Indispensable) है। अतएव लोग इन तथ्यों के प्रति श्रद्धा रखेंगे और वे इस कारण रुढ़िवादिता से चिपके रहेंगे।

S.N. Choudhary
Marwari college
T.M.B.U

Scanned with CamScanner